

पाठ्यक्रम में भाषा का उपयोग
विषय कोड़
खण्ड – 2
ईकाई – 4

रूपरेखा

- 1.1 नवीन भाषा शिक्षण तकनीक
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 चिन्तन
 - 1.3.1 चिन्तन की प्रक्रिया
 - 1.3.2 चिन्तन की योग्यता का भाषा की अन्य योग्यताओं से सम्बंध
 - 1.3.3 आधुनिक काल में चिन्तन की योग्यता के विकास की आवश्यकता
 - 1.3.4 समीक्षात्मक योग्यता
- 1.4 विज्ञान
 - 1.4.1 विज्ञान के विकास में शिक्षा की भूमिका
 - 1.4.2 विज्ञान शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ
 - 1.4.3 विज्ञान शिक्षा के विकास के लिए प्रयास
- 1.5 सामाजिक विज्ञान
 - 1.5.1 औद्योगीकरण एवं नगरीकरण
 - 1.5.2 कृषि का विकास
 - 1.5.3 कार्यशील महिलाओं का मुद्दा
 - 1.5.4 बढ़ती जनसंख्या
 - 1.5.5 संसाधनों का दोहन एवं संरक्षण
- 1.6 कार्यक्रम का विवरण
 - 1.6.1 विवरण देने के उद्देश्य
 - 1.6.2 विवरण प्रविधि की विशेषता
 - 1.6.3 विवरण प्रविधि का प्रयोग करते समय सावधानियाँ
 - 1.6.4 विवरण प्रविधि की सीमाएँ
- 1.7 व्याख्यात्मक
 - 1.7.1 व्याख्यात्मक लेखन के सोपान

- 1.8 वर्णनात्मक
 - 1.8.1 वर्णन प्रविधि की विशेषता
 - 1.8.2 वर्णन की प्रभावोत्पादकता
 - 1.8.3 वर्णन की प्रविधि का प्रयोग करते समय सावधानियाँ
 - 1.9.4 वर्णन प्रविधि की सीमाएँ
- 1.9 तर्कशीलता
 - 1.9.1 तर्क शक्ति का विकास
 - 1.9.2 गद्य और पद्य में तुलना
 - 1.9.3 निरीक्षण द्वारा तर्क शक्ति का विकास
- 1.10 पठन (वाचन)
 - 1.10.1 अर्थ एवं परिभाषा
 - 1.10.2 वाचन का महत्व
 - 1.10.3 वाचन के उद्देश्य
 - 1.10.4 वाचन की विशेषता
 - 1.10.5 वाचन के आधार
 - 1.10.6 वाचन शिक्षण की विधियाँ
 - 1.10.7 वाचन शिक्षण में सावधानियाँ
 - 1.10.8 सुन्दर वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
 - 1.10.9 वाचन दोषों को दूर करने की विधियाँ
 - 1.10.10 वाचन के प्रकार
- 1.11 अपनी प्रगति की जाँच
- 1.12 ईकाई सारांश
- 1.13 संदर्भ सूची

1.1 नवीन भाषा शिक्षण तकनीक

शिक्षा शास्त्र का विकास अभी हाल ही में एक अनुशासन के रूप में हुआ है। इस संबंध में विद्वानों के विचार अधिकतर भिन्न रहे हैं, क्योंकि वे शिक्षा का कई अर्थों में प्रयोग करते आ रहे हैं। शिक्षा शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से प्रक्रिया प्रशिक्षण तथा एक अनुशासन के लिए किया जाता है। शिक्षा को प्रशिक्षण तथा शिक्षण पद्धतियों तक ही सीमित मानते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं। यह एक प्राचीन विचारधारा है। आधुनिक युग में शिक्षा को एक स्वतंत्र अनुशासन माना जाने लगा है। अन्य विषयों जैसे मनोविज्ञान, भूगोल, समाजशास्त्र, इतिहास की भांति शिक्षाशास्त्र भी एक स्वतंत्र अध्ययन का विषय है, जिसकी अपनी पाठ्यवस्तु तथा अपना अध्ययन क्षेत्र है। शिक्षा तकनीकी का तात्पर्य उस पाठ्य वस्तु से है जो शिक्षा की प्रक्रिया के क्या कैसे और क्यों का उत्तर देती है इसमें शिक्षा प्रक्रिया संबंधी वैज्ञानिक सूचनाओं के साथ उसकी उपयोगिता को अधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षा तकनीकी कोई नई शिक्षण पद्धति नहीं है अपितु ऐसा विज्ञान है जिनके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति की जाती है।

1.2 उद्देश्य

इस ईकाई को पढ़ने के पश्चात् –

1. नवीन भाषा शिक्षण तकनीक से परिचित हो सकेंगे।
2. चिन्तन प्रक्रिया के बारे में जान सकेंगे।
3. विज्ञान के विकास में शिक्षा की भूमिका के बारे में जान सकेंगे।
4. सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत आने वाले विभिन्न प्रकरणों के बारे में जान सकेंगे।
5. विवरण प्रविधि के बारे में जान सकेंगे।
6. व्याख्यात्मक लेखन के प्रमुख साधनों से परिचित हो सकेंगे।
7. वर्णनात्मक प्रविधि के बारे में संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
8. तर्कशक्ति के विकास से परिचित हो सकेंगे।
9. वाचन के बारे में विस्तार से जान सकेंगे।

1.3 चिन्तन

- ऐसा चिन्तन जिसके बारे में बात की जा सकती है, भाषा के माध्यम से होती है।
- भाषा कोई वस्तु नहीं वरन् मानव-मस्तिष्क की एक सतत् प्रक्रिया है। भाषा को उसके वक्ता से अलग करके नहीं देखा जा सकता।
- भाषा की चार अवस्थाएँ मानी हैं – बैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती तथा परा।
- शाब्दिक भाषा तथा गणितीय भाषा में अंतर। शाब्दिक भाषा में शब्दों का अर्थ बहुत सुनिश्चित नहीं होता है।

1.3.1 चिन्तन की प्रक्रिया

- शैशव के दो तीन वर्षों के बाद प्रत्येक बालक में भाषा का आंतरिक रूप विकसित होने लगता है।
- चिन्तन की प्रवृत्ति सहज होती है। लेकिन परिस्थितियों में उसे बढ़ाया जा सकता है तथा दिशा दी जा सकती है।
- किशोरावस्था में चिन्तन की प्रवृत्ति का बहुत अधिक विकास होता है।
- प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुसार एक विशेष सीमा तक सूक्ष्म चिन्तन करने में समर्थ होता है।

1.3.2 चिन्तन की योग्यता का भाषा की अन्य योग्यताओं से संबंध

- सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने की योग्यता का चिंतन की योग्यता से सीधा संबंध है। शारीरिक अंगों के पीछे मस्तिष्क में होने वाली प्रक्रिया सभी में समान है।
- बोलने या लिखने से पहले व्यक्ति चिंतन करता है जिसके परिणाम को वह वाणी अथवा लेखनी में से किसी एक के माध्यम द्वारा प्रकट कर सकता है।
- किसी व्यक्ति की सक्रिय भाषा प्रक्रिया को हम एक तरफ चिंतन की योग्यताओं में एवं दूसरी तरफ बोलने और लिखने की कुशलताओं में बांट सकते हैं।

1.3.3 आधुनिक काल में चिंतन की योग्यता के विकास की आवश्यकता

- ज्ञान का विस्तार तथा उसे आत्मसात करने में कठनाई।
- आधुनिक शाक्तिशाली संचार के माध्यमों के सम्मुख व्यक्ति की क्षुद्रता।
- विघटित होता समाज तथा टूटते मूल्य।
- अपने राष्ट्र तथा विश्व की संकटाकुल स्थिति। भारत में आजकल के किशोरों का भविष्य।
- विज्ञान का एक सीमा पर जाकर असमर्थ हो जाना।

1.3.4 समीक्षात्मक योग्यता

- भावपूर्ण मार्मिक स्थलों को पहचान सकना।
- रचना को प्रभावशाली बनाने वाले प्रयोगों एवं अभिव्यक्ति के सौन्दर्य को पहचान सकना।
- पाठ्य-वस्तु के विचारों तथा मूल्यों को परख सकना।
- पेश पाठ्य-वस्तु की तुलना पूर्वपठित वस्तु से कर सकना।
- लेखक द्वारा व्यक्त भावों अथवा विचारों से अपनी सहमति या असहमति प्रकट कर सकना।
- भाषा की विशेषता को पहचान सकना।
- तत्वों के आधार पर पठित-कहानी, नाटक, एकांकी की सामान्य समीक्षा कर सकना विशेषता अग्रंकित दृष्टियों से (i) कथानक (ii) चरित्र चित्रण (iii) संवाद
- कविता के सौन्दर्य तत्वों का बोध तथा उनकी रसानुमूति।
- पठित रचना पर अपना स्वतंत्र विचार प्रकट कर सकना।

गतिविधि :- 1

छात्रों को एतिहासिक जगहों का शैक्षिक भ्रमण पर ले जाया जाए व चिन्तन, मन्त्र द्वारा उस पर निबंध लिखवाया जाए।

अभ्यास कार्य

प्र. 1 चिन्तन की योग्यताओं का विकास छात्रों में किस प्रकार किया जा सकता है ? लिखिए

1.4 विज्ञान

विज्ञान आज सम्यता एवं प्रगति का पर्याय बन चुका है। तकनीकी के विकास ने आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया है तथा क्रांतिकारी वैज्ञानिक विचारों ने लोगों के जीवन-दर्शन को भी प्रमाणित किया है। विज्ञान का ज्ञान अब इतना महत्वपूर्ण माना जाने लगा है कि लोग अपनी दिन-प्रतिदिन की समस्याओं का वैज्ञानिक हल चाहने लगे हैं अतः किसी भी देश को अपने समग्र विकास के लिये आज अधिक से अधिक तकनीकी विशेषज्ञों की आवश्यकता अनुभव होने लगी है। विज्ञान के विकास ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं क्रिया कलापों को प्रभावित किया है।

उदाहरण :-

- कृषि
- उद्योग
- चिकित्सा
- संचार
- परिवहन
- दैनिक सामान्य जीवन

इन सभी की वर्तमान आवश्यकता की पूर्ति विज्ञान से ही सम्भव है। राष्ट्रीय सुरक्षा तथा निःशस्त्रीकरण की समस्या का हल भी विज्ञान ही प्रदान कर सकता है। वर्तमान आर्थिक विकास का मूल विज्ञान है। विज्ञान से न केवल भौतिक प्रगति हो रही है, बल्कि इससे अभौतिक प्रगति अर्थात् व्यक्तियों के सोचने के ढंग एवं दृष्टीकोण में भी परिवर्तन हो रहा है अतः आज व्यक्ति एवं समाज के लिये विज्ञान एवं उनकी प्रक्रियाओं की सही समझ होना बहुत की आवश्यक है। विकासशील समाज के लिए इसका और अधिक महत्व है।

1.4.1 विज्ञान के विकास में शिक्षा की भूमिका

- कोठारी-आयोग के अनुसार “हमने शिक्षा की पुनर्संरचना के लिए इस प्रतिवेदन में जिनसे बुनियादी उपागम एवं दर्शन को अपनाया है वह इस धारणा पर आधारित है कि देश की प्रगति, कल्याण एवं सुरक्षा शिक्षा के विस्तार एवं गुणात्मक विकास एवं विज्ञान के अनुसन्धान पर ही निर्भर है।” परिणामस्वरूप भारत में आज शिक्षा के

विस्तार के साथ विज्ञान का भी व्यापक विस्तार हुआ है। इसके द्वारा प्रशिक्षित वैज्ञानिक शक्ति में भी वृद्धि हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय इंजीनियरिंग कृषि एवं चिकित्सा शिक्षा संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टि से बहुत पिछड़ी हुई थी।

- आज प्रत्येक जिले में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आई.टी.आई.) पॉलीटेक्निक तथा उच्चतर तथा रीजनल इंजीनियरिंग कालेज एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.टी.आई.) की स्थापना से इंजीनियरिंग शिक्षा का एक व्यवस्थित जाल सा फैल गया है।
- इसके साथ ही आज भारत में कृषि शिक्षा हेतु लगभग 20 विश्वविद्यालय एवं 100 से अधिक कालेज हैं।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् एवं कृषि विश्वविद्यालय द्वारा कृषि क्षेत्र में किये गये अनुसंधानों के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि, हरित क्रांति, खाधान में आत्मनिर्भरता, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि आदि लक्ष्यों को प्राप्त करने में बहुत अधिक सफलता मिली है।
- चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ पर 1947 में मात्र 15 मेडीकल कालेज थे वही आज देश में इनकी संख्या 100 से अधिक हो गई है।
- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली तथा स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान के कई और संस्थान आज विश्व स्तर के माने जा रहे हैं।
- औषधि अनुसंधान संस्थानों एवं औषधि निर्माता कारखानों की उपलब्धियां तो बेजोड़ हैं जिन्होंने सभी तरह की दवाओं से बाजारों को भर दिया है परिणामस्वरूप मनुष्य की औसत आयु में बढ़ोतरी हुई है।

1.4.2 विज्ञान शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ

विज्ञान के विकास के मार्ग में जो बाधाएँ हैं, वे निम्न प्रकार हैं :-

- नियोजन एवं योजनाबद्ध कार्यक्रम का आभाव।
- विज्ञान शिक्षा को आधार प्रदान करने के लिए अनिवार्य सामान्य शिक्षा में गुणात्मक सुधार की आवश्यकता।
- विज्ञान द्वारा वांछनीय प्रवृत्तियों का विकास न होना तथा सरकारी नौकरियों की अधिक लालसा।
- विज्ञान शिक्षा के लिए कुशल अध्यापकों का आभाव।
- माध्यमिक स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा का आभाव।
- छोटे तथा मध्यम स्तर पर तकनीशियनों का आभाव।
- भारत में आपार मानव शक्ति का समुचित उपयोग न हो पाना।
- अनुपयुक्त पाठ्यक्रम।
- शिक्षा का माध्यम।
- विज्ञान शिक्षा तथा उद्योगों में सहयोग का आभाव।
- विज्ञान के आधुनिकीकरण की समस्या।
- अनुसंधान के अपर्याप्त संसाधन।
- आधुनिकीकरण के कारण नवीन समस्याओं का उदय।
- बेरोजगारी की समस्या।

1.4.3 विज्ञान शिक्षा के विकास के लिए प्रयास

विज्ञान शिक्षा के महत्व को देखते हुए इसे माध्यमिक स्तर तक शिक्षा का एक अभिन्न अंग बना दिया गया है, परन्तु अभी तक विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम अतिन्यून तथा बहुत पिछड़ा हुआ है। विज्ञान शिक्षा के लिए आवश्यक सामग्री उपकरण एवं अन्य सुविधाओं का आभाव है। पाठ्यक्रम बहुत पुराना है तथा शिक्षण विधियाँ परम्परागत हैं। पुस्तकीय ज्ञान पर ही अधिक बल दिया जाता है तथा प्रयोगात्मक कार्यों को प्रायः गौण समझा जाता है। अतः विज्ञान शिक्षा तभी अर्थपूर्ण हो सकती है, जब इसके पाठ्यक्रम को पुनर्संगठित एवं नवीनीकृत करके समुचित शिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाये। इसके लिए हमारे देश में विभिन्न स्तरों पर जो प्रयास किये जा रहे हैं वे निम्न प्रकार हैं :-

- **प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा** कोठारी आयोग ने प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा का उद्देश्य “बालकों में उनके भौतिक एवं जैवकीय पर्यावरण के प्रमुख तथ्यों अवधारणाओं, नियमों एवं सिद्धांतों तथा प्रक्रियाओं की सही समझ विकसित करना” निर्धारित किया है। इसके लिए विज्ञान शिक्षा के प्रारम्भिक पाठ्यक्रम में –
- स्वच्छता स्वस्थ आदतों का निर्माण
- अवलोकन क्षमता का विकास
- पेड़-पौधों एवं जीव-जन्तुओं की जानकारी
- हवा
- पानी
- मौसम का सामान्य ज्ञान
- आकाशीय नक्षत्रों
- सूर्य
- चन्द्रमा आदि का अवलोक सम्मिलित किया जाना चाहिए।

उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 5 से 7) में :-

- भौतिक शास्त्र
- रसायन शास्त्र
- जीव विज्ञान
- भूगर्भ विज्ञान
- नक्षत्र विज्ञान

इसके लिए सभी प्राथमिक शालाओं में अलग से विज्ञान कक्ष एवं प्रयोगशाला स्थापित करने पर बल दिया गया है।

- **माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा** इस स्तर पर विज्ञान शिक्षा को मानसिक अनुशासन एवं उच्च शिक्षा को आधार प्रदान करने वाला समझा जाता है। अभी तक इस स्तर पर परम्परागत पाठ्यक्रम (सैद्धांतिक एवं अमूर्त ज्ञान) पर ही अधिक बल दिया जाता था। परन्तु विज्ञान शिक्षा के नवीन पाठ्यक्रम में भौतिकशास्त्र के बदलते अवधारणात्मक ढाँचे, रसायनशास्त्र का उद्योगों में प्रयोग, कृषि एवं दैनिक जीवन में विज्ञान एवं तकनीक के प्रयोग पर अधिक बल दिया जा रहा है। जीव विज्ञान में अन्वेषण विधि पर जोर दिया जा रहा है।
- **उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा** हाईस्कूल के पश्चात् सभी विद्यार्थियों के लिए विज्ञान की शिक्षा अनिवार्य नहीं है। इस स्तर पर विज्ञान के विभिन्न विषय समूहों में से किसी एक समूह के विषयों में विशेषज्ञ अध्ययन करना होता है।

इन विषयों में

- भौतिक
- जीव विज्ञान
- भूगर्भ विज्ञान
- गणित

इसी स्तर से इन विषयों के गहन अध्ययन की शुरुआत होती है जो इंजीनियरिंग, चिकित्सा, कृषि आदि की उच्चतर शिक्षा के लिए आधार प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान शिक्षा के ज्ञान के लिए वैज्ञानिक तथ्यों के ज्ञान के साथ-साथ बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम को नया रूप प्रदान करके उपयुक्त पाठ्य-पुस्तकों एवं शिक्षकों के लिए दिग्दर्शिकाओं का निर्माण किया जाना चाहिए विज्ञान शिक्षा को कृषि एवं उद्योग से जोड़कर यथार्थवादी रूप प्रदान करना चाहिए।

गतिविधि :- 2

“करके सीखने” हेतु छात्रों से विज्ञान के माडल बनवाए जाए।

अभ्यास कार्य

0.1 विज्ञान के विकास में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालिए ?

1.5 सामाजिक विज्ञान

सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकरणों को समझा जा सकता है।

- औद्योगीकरण एवं नगरीकरण
- कृषि का विकास
- कार्यशील महिलाओं का मुद्दा
- बढ़ती जनसंख्या
- संसाधनों का दोहन एवं संरक्षण

1.51 औद्योगीकरण एवं नगरीकरण

आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक प्रक्रिया है। यह एक दूसरे के कारण तथा परिणाम है। जब किसी क्षेत्र में उद्योग धन्धे विकसित हो जाते हैं तथा मशीनों के द्वारा बड़े-बड़े मिल एवं कारखानों में उत्पादन कार्य होने लगता है तब वहां पर नगरीकरण की प्रक्रिया तेजी से क्रियाशील होती है। भारत में अनेक नगरों का विकास इसी प्रकार हुआ है इस अर्थ में औद्योगीकरण नगरीकरण का कारण होता है इसके विपरीत जब सुविधाओं की अधिक से अधिक उपलब्धता या अन्य कारणों से कोई ग्रामीण क्षेत्र या समुदाय नगर का रूप धारण कर लेता है तो वहाँ पर धीरे-धीरे उद्योग धन्धे भी पनपने लगते हैं इस स्थिति में औद्योगीकरण नगरीकरण का परिणाम होता है। इस प्रकार औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रियाएँ एक दूसरे से सम्बंधित ही नहीं, बल्कि एक दूसरे की पूरक भी है। अतः इन दोनों के सामाजिक आर्थिक प्रभाव भी प्रायः एक जैसे ही होते हैं। आज भारत में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के फलस्वरूप जो परिवर्तन हुए हैं तथा जो गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। वे निम्नांकित हैं :-

(क) सामाजिक जीवन में परिवर्तन

1. सामुदायिक जीवन का हास	2. व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का विकास
3. सामाजिक मूल्यों एवं संबंधों में परिवर्तन	4. जाति प्रथा का निर्बल होना तथा अंतरजातिय विवादों का प्रचलन
5. स्थान की कमी के कारण गन्दी बस्तियों का विकास	6. रोजगार में पुरुषों की अधिकता के कारण स्त्री-पुरुष अनुपात में अन्तर
7. मनोरंजन की व्यापारीकरण	8. मानसिक चिन्ता, दुर्घटना, बीमारी एवं रोगों में वृद्धि
9. अपराध, व्यभिचार संघर्ष एवं प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि	10. भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदूषण की समस्या

(ख) पारिवारिक जीवन में परिवर्तन

1. संयुक्त परिवारों का विघटन एवं एकाकी परिवारों का उदय	2. स्त्रियों का घर से बाहर काम करना
3. पारिवारिक नियंत्रण एवं महत्व में कमी आना	4. प्रेम विवाह, अन्तर्जातिय विवाह, विलम्ब विवाह एवं तलाक का बाहुल्य

(ग) धार्मिक जीवन में परिवर्तन

1. परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन एवं नवीन मूल्यों का विकास

2. धार्मिक संकीर्णता में कमी तथा सहनशीलता में वृद्धि
3. नैतिक आचरण में कमी

(घ) राज्य के कार्यों में परिवर्तन

- (i) नये श्रमिक वर्ग का उदय एवं उनकी समस्याएँ
- (ii) नई कॉलोनियों एवं बस्तियों की व्यवस्था
- (iii) स्त्री-श्रमिकों के वेतन छुट्टी एवं सुरक्षा की समस्या
- (iv) बाल-श्रमिकों के शोषण की समस्या
- (v) शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति की समस्या

(ङ) ग्रामीण समुदायों में परिवर्तन

- (i) गाँवों में रोजगार की कमी
- (ii) हस्त कलाओं एवं ग्रामोद्योग का हास
- (iii) गाँवों का नगरीकरण

(च) आर्थिक जीवन में परिवर्तन

- (i) पूंजीवाद का विकास
- (ii) श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण
- (iii) बड़े पैमाने पर उत्पादन के कारण बेकारी की समस्या में बढ़ोत्तरी
- (iv) औद्योगिक झगड़े, बीमारी तथा दुर्घटनाओं में वृद्धि
- (v) नशाखोरी, वेश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति एवं बाल अपराध में वृद्धि

औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की समस्याएँ के समाधान में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। उदाहरण— औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण एक प्रमुख समस्या प्रदूषण की है। इसके लिए पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों की जानकारी उनके प्रमुख कारकों एवं उन्हें दूर करने के उपायों से सम्बंधित अन्तवस्तु का समावेश किया जाना चाहिए।

अभ्यास कार्य

प्र.1 औद्योगिकरण एवं नगरीकरण की समस्याओं के समाधान में शिक्षा की भूमिका बताइयें?

1.5.2 कृषि का विकास

भारत एक कृषि प्रधान देश है। स्वतंत्रता प्राप्ति के 50 वर्ष बाद भी आज देश के लगभग 70 प्रतिशत आबादी के जीविकोपार्जन का प्रमुख स्रोत कृषि ही है। कृषि को भारतीय सामाजिक – आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है। इसकी पुष्टि इन तथ्यों से भी होती है कि राष्ट्रीय आय में एक तिहाई कृषि का है तथा भारत की दो तिहाई

जनसंख्या के रोजगार का मूल स्रोत यही है। भारत की लगभग एक अरब से अधिक जनसंख्या के खाद्यान तथा 42 करोड़ पशुओं के लिए चारा कृषि क्षेत्र से ही उपलब्ध होता है। भारत के कई उद्योग जैसे चीनी, सूती वस्त्र, जूट, बागान आदि प्रत्यक्ष रूप से कृषि के विकास के साथ जुड़े हैं।

उपयुक्त विवेचना से भारत के कृषि के महत्व का सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है अतः स्वाभाविक है कि कृषि के विकास के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर अनेक प्रयास किये गये हैं।

भारत में हरित क्रांति लाने के लिए उत्तम बीज नवीन कृषि उपकरणों, रासायनिक उर्वरकों एवं सिंचाई सुविधाओं के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया गया है। इससे कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि भी हुई है किन्तु जैसा की पहले बताया जा चुका है कि राष्ट्रीय आय में कृषि की प्रमुख भागीदारी होने तथा अधिकांश जनसंख्या के रोजगार का स्रोत होने के कारण इसके विकास पर अभी और ध्यान देने की आवश्यकता है। भारतीय कृषि के विकास में कुछ प्रमुख समस्याएँ निम्न प्रकार हैं:-

- कृषि पर जनसंख्या का बढ़ा हुआ भार
- कृषकों का परम्परावादी दृष्टिकोण
- कृषकों का अशिक्षित होना
- वित्तीय संसाधनों का आभाव
- साहूकारों का नियंत्रण
- दोषपूर्ण विपणन व्यवस्था
- उत्पादन की पिछड़ी तकनीकें
- उत्तम बीजों का कम प्रयोग
- सिंचाई सुविधाओं की अपर्याप्तता
- मानसून पर अधिक निर्भर
- फसलों की सुरक्षा का आभाव
- कृषि शिक्षा का आभाव
- कृषि अनुसन्धानों की कमी

कृषि विकास की समस्याओं के समाधान के उपाय

भारत में कृषि के विकास के मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधाओं को दूर करने के लिए नि. लि. उपायों को अपनाया जा सकता है :-

- भूमि सुधार कार्यक्रमों को दृढ़ता से लागू किया जाए।
- उन्नत बीज, खाद, सिंचाई, कृषियुक्त, कीटनाशक दवाओं आदि उपलब्ध करना।
- कृषि विकास की नई तकनीकें का प्रयोग बताने के लिए मेलों, प्रदर्शनियों एवं नवीन अनुसन्धानों के प्रचार की व्यवस्था।
- सिंचाई सुविधाओं का अधिकाधिक विस्तार।
- कृषि निति का निर्माण किया जाए।
- जनसंख्या नियंत्रण हेतु जनसंख्या शिक्षा पर बल।
- कृषि शिक्षा प्रसार पर बल।
- कृषि विकास कार्यक्रमों एवं ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास।

- कृषि सुरक्षा के उपाय के तहत फसल बीमा योजना लागू।
- संबंधित व्यवसाय मत्स्य पालन, मुर्गी पालन को प्रोत्साहन।

अभ्यास कार्य/गतिविधि – 3

प्र.1 कृषि विकास की समस्याओं के समाधान के उपाय बताते हुए अपने गाँवों के एक समूह को इनसे अवगत करवाएं जिसका फोटो, कृषकों की संख्या, गाँव का नाम आदि जानकारी एकत्रित कर प्रोजेक्ट कार्य के रूप में तैयार करें ?

1.5.3 कार्यशील महिलाओं का मुद्दा

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में स्त्रियों की सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ आज सभी पक्षों में उन्हें सम्मानजनक स्थान प्रदान है जहाँ एक ओर स्त्रियों की स्थिति में सुधार हुआ वहीं दूसरी ओर सामाजिक व पारिवारिक विघटन के कारण नई समस्या व चुनौतिया भी उत्पन्न हुई कारण एकाकी परिवारों का प्रचलन बढ़ा भौतिक युग की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पुरुष के अर्थाजन से काम नहीं चल पाता। अतः स्त्रियों को भी अर्थाजन में सहयोग करना पड़ता है इन कार्यशील महिलाओं को परम्परागत सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन में अनेक समस्याओं का सामाना करना पड़ रहा है ये प्रमुख समस्याएँ निम्न प्रकार है :—

- समाज का रूढ़िवादी दृष्टीकोण
- बच्चों के पालन पोषण की समस्या
- निजी संस्थाओं में समान कार्य हेतु पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को कम वेतन
- आवागमन एवं परिवहन की समस्या
- आवास की समस्या
- पुरुष सहकर्मियों को अनुचित दृष्टीकोण
- पति-पत्नी में सामंजस्य की समस्या
- महिला कल्याण संगठनों का आभाव
- दूरस्थ क्षेत्रों में महिला कर्मियों की नियुक्ति
- स्त्री शिक्षा की कमी
- स्त्री शिक्षा का अनुपयुक्त पाठ्यक्रम

कार्यशील महिलाओं की समस्याओं को दूर करने के उपाय

महिलाओं की समस्याओं को दूर करने व स्थिति में सुधार करने के उद्देश्य से सरकारी स्तर पर अनेक प्रयास किये गये हैं कुछ प्रयास निम्न प्रकार हैं :-

- समान वेतन अधिनियम 1976
- फैक्टरी संशोधन अधिनियम 1976
- मातृत्व लाभ अधिनियम 1961 बाद में 1976 से संशोधन
- विवाह कानून संशोधन अधिनियम 1976
- प्रौढ़ महिलाओं के लिए कार्यात्मक साक्षरता की नई योजना 1975-76
- जरूरतमंद महिलाओं को रोजगार के अवसर
- केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड ने 1968 में एक शिक्षण कार्यक्रम शुरू
- शहर में महिला कर्मचारियों को उचित दर पर आवास उपलब्ध कराने हेतु हास्टल
- स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए सरकार द्वारा अधिक से अधिक विद्यालयों की स्थापना
- संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1975 को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया तथा प्रतिवर्ष 8 मार्च अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

गतिविधि – 4

कार्यशील महिलाओं को आने वाली समस्याओं का विश्लेषण कीजिए।

अभ्यास कार्य

प्र.1 कार्यशील महिलाओं की समस्या को दूर करने के अन्य उपायों को लिखिए?

1.5.4 बढ़ती जनसंख्या

हमारी सभी समस्याओं का कारण देश की बढ़ती हुई जनसंख्या है।

भारती की जनगणनाओं के आंकड़े

	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2017
1. कुल जनसंख्या (करोड़ में)	36.1	43.9	54.8	68.3	84.4	102.87	121.05
2. दशक में जनसंख्या (वृद्धि दर)%	13.31	21.51	24.80	24.66	23.50	22	17.70
3. जनसंख्या की औसत दर %	1.25	1.96	2.20	2.22	2.11	1.95	1.64
4. जनसंख्या का घनत्व प्रतिवर्ग कि.मी.	117	142	177	216	267	324	382
5. लिंग अनुपात (स्त्रियां प्रति हजार पुरुष)	946	941	930	934	927	933	943
6. साक्षरता दर %							
1 पुरुष	27.2	40.4	46.0	56.4	63.9	75.26	67.60
2. स्त्री	8.9	15.3	22.0	29.8	39.4	54.16	80.90
3. कुल	18.3	28.3	34.5	43.6	52.1	65.38	73.0

उपयुक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग डेढ़ करोड़ लोग प्रतिवर्ष हमारी आबादी में बढ़ते जा रहे हैं इसके कारण बेरोजगारी तथा कुपोषण के शिकार लोगों की संख्या भी बढ़ती जा रही है जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव—शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं जैसे पानी, बिजली, आवास एवं खाद्यान्न आदि पर पड़ रहा है। जनसंख्या वृद्धि के दो कारण हैं। गरीबी, अशिक्षा और जनसंख्या वृद्धि की भारतीय मान्यता है कि पुत्र उत्पन्न करने पर ही पितृ ऋण से मुक्त हुआ जा सकता है।

बढ़ती जनसंख्या के कारण शैक्षिक समस्याएँ

- शिक्षा के सभी स्तरों पर बहुत अधिक नामांकन
- संसाधनों का अभाव
- अध्यापकों की कमी
- अपत्यय एवं अवरोधन की समस्या
- बेरोजगारी
- योग्यता के अनुकूल रोजगार न मिल पाना
- शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट
- छात्र अनुशासन हीनता में वृद्धि

डा. वशिष्ठ एवं उपाध्याय “जनसंख्या की तीव्र गति से वृद्धि के परिणामस्वरूप मानव जीवन के सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक तथा संस्कृतिक पक्षों पर पड़ने वाले कुप्रभावों के प्रति जागरूकता एवं सम्बद्ध समाधानों के विषय में वैचारिक क्रांति की शैक्षिक व्यवस्था ही जनसंख्या शिक्षा है।”

जनसंख्या शिक्षा को क्रियान्वित करने के सुझाव

1. परिवारिक वृक्ष बनाना इसमें विद्यार्थी पिछली तीन पीढ़ियों की जानकारी जैसे सदस्यों की संख्या, जन्म, मृत्यु, उसके कारण आदि को प्रस्तुत करें इससे परिवार की जनसंख्या वृद्धि का पता चलेगा।
2. विद्यार्थी घर के बड़ों से प्रमुख बीमारियों की जानकारी एकत्र कर चर्चा करें।
3. नगरों व गाँवों में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संबंधी जानकारी का तुलनात्मक अध्ययन करें।
4. अपने गाँव या नगरों की पिछले कुछ वर्षों के जनसंख्या के आँकड़े एकत्र कर ग्राफ बना कर जनसंख्या के झुकाव को देखें।
5. अपने विद्यालय के नामांकन के आकड़ों को देखें।
6. विद्यार्थी विभिन्न देशों के क्षेत्रफल तथा जनसंख्या चार्ट बनाकर उनके जनसंख्या घनत्व की तुलना कर सकते।
7. विद्यार्थी दो परिवार जिसमें पहले में एक कमाने वाला व पांच आश्रित तथा दूसरे में दो कमाने वाले दो आश्रित बच्चे हो के अनेक पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते।
8. निम्न मध्यवर्ग के परिवारों का तुलनात्मक अध्ययन।
9. 30 वर्षों के पश्चात् जनसंख्या दुगुनी होने की सम्भावना है। खाद्यान्न की कितनी आवश्यकता इसे पूरी कैसे करेंगे इन प्रश्नों पर चर्चा करना।
10. प्रति वर्ष प्राथमिक शिक्षा में एक करोड़ बच्चे बढ़ते जाएँगे तो कितने और अध्यापकों एवं विद्यालयों की आवश्यकता।
11. कितने चिकित्सालय की आवश्यकता व कितने हैं।
12. कामकाजी व घरेलू महिलाओं के परिवारों का अध्ययन।
13. शिक्षित माता का परिवार पर प्रभाव
14. विकसित व विकासशील देशों में लोगो के रहन-सहन का तुलनात्मक अध्ययन।

अभ्यास कार्य

प्र.1 कृषि विकास की समस्याओं के समाधान के उपाय बताइए।

1.5.5 संसाधनों का दोहन एवं संरक्षण

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है तथा सामाजिक परिवर्तन एवं विकास का एक प्रमुख साधन है। शिक्षा के द्वारा ही सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास सम्भव होता है। अतः शिक्षा के विकास के लिए उपलब्ध संसाधनों का अधिक से अधिक सदुपयोग किया जाना चाहिए तथा इन संसाधनों को संरक्षित रखने का भी प्रयास होना चाहिए। शिक्षा के विकास के प्रमुख संसाधनों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

प्राकृतिक संसाधन – मनुष्य का जीवन प्राकृतिक संसाधनों वायु, जल, भूमि, वन एवं वनस्पति आदि पर निर्भर है। यही बालक की वास्तविक प्रायोगिक एवं अभ्यासशाला होती है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में इन साधनों का बहुत प्रयोग है इनका संरक्षण भी शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। पाठ्यक्रम विकास में इन संसाधनों की उपयोगिता एवं उनके संरक्षण के उपयों का समावेश अवश्य किया जाना चाहिए।

मानवीय संसाधन – मानव स्वयं एक संसाधन है तथा शिक्षा उसके समुचित विकास का सशक्त माध्यम प्रत्येक समुदाय में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो किसी विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञता रखते हैं जैसे – पूर्व शिक्षा, पूर्व अनुभव, चिन्तन, सृजनात्मकता के कारण होती है। अतः विद्यालयों को इन विशेषज्ञों की सेवाओं का लाभ उठाना चाहिए।

सामुदायिक संसाधन – जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, अभिलेखों, विद्यार्थी जीवन के अनुभवों विशेषज्ञों की सेवाओं, सामुदायिक कुशलताओं आदि का उपयोग किया जा सकता है।

वित्तीय संसाधन – सभी तरह का विकास समुचित रूप से हो इसके लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

आधुनिक संसाधन – जैसे पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं, प्रेस, रेडियो, टेप रिकार्डर, वीडियोफिल्म आदि के प्रयोग से शिक्षा के विकास को नई दिशा व गति मिली है।

गतिविधि – 5

प्र.1 एक शिक्षक के रूप में शिक्षा द्वारा आप सामाजिक परिवर्तन कैसे करेंगे। लिखिए ?

1.6 कार्यक्रम का विवरण

विवरण शिक्षण के लिए अत्यन्त आवश्यक युक्ति मानी जाती है विवरण को कथन, शिक्षण स्वकथन भी कहा जाता है।

1.6.1 विवरण देने का उद्देश्य

छात्रों के मस्तिष्क में एक मानचित्र बनाना। **सक्सेना के शब्दों में** विवरण देना एक कला है इस कला में निपुण होने के लिए शिक्षक अपनी कल्पना शक्ति का सहारा लेते हुए किसी वस्तु अथवा घटना का विवरण इतने उत्साह तथा प्रवाहशीलता के साथ प्रस्तुत करता है कि कक्षा के सभी छात्रों को इसका ज्ञान सरलतापूर्वक हो जाता है।

1.6.2 विवरण प्रविधि की विशेषता

कक्षा में इस विधि को निम्नलिखित प्रविधि के कारण अपनाया जाता है।

- इस प्रविधि के प्रयोग से छात्रों को इतना ज्ञान मिल जाता है कि उन्हें अलग से पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती।

- इस प्रविधि में शिक्षक छात्रों के समक्ष विवरण प्रस्तुत करता है इससे छात्रों के मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव पड़ता है।
- इस प्रविधि में छात्रों को पुस्तकों की अपेक्षा कम समय में आवश्यक ज्ञान प्राप्त हो जाता है।
- इस प्रविधि में विषय वस्तु के प्रत्येक पक्ष पर प्रकाश डालकर उसकी पूर्णरूपेण समीक्षा की जाती है।
- छात्र अत्यन्त रोचक तथा मितत्ययी ढंग से ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होते हैं।
- प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया विवरण छात्रों में ध्यानपूर्वक विषय वस्तु को समझने की क्षमता विकसित करने में सहायक होता है।
- विवरण विधि छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करने में प्रभावशाली भूमिका निभाती है।
- छात्रों की तार्किक शक्ति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

1.6.3 विवरण प्रविधि का प्रयोग करते समय सावधानियाँ

इसका प्रयोग करते समय निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए :-

1. शिक्षक को उतना ही विवरण देना चाहिए जितनी आवश्यकता है।
2. शिक्षक को विवरण देते समय धैर्य व आत्मविश्वास बनाये रखना।
3. शिक्षक को छात्रों की कल्पनाशक्ति जाग्रत करने का प्रयास करना।
4. विवरण को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाने हेतु शिक्षक को आवश्यकतानुसार ही कल्पना का सहारा लेना चाहिए।
5. ध्यान रखा जाए कि विवरण प्रसंग के अनुरूप हो। उचित गति से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया गया हो।
6. विवरण देते समय शिक्षकों को अपने स्वर, उच्चारण व आरोह-अवरोह पर भी ध्यान देना चाहिए।
7. तथ्य एवं भाषा की दृष्टि से विवरण में किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं होनी चाहिए।
8. विवरण धीरे-धीरे प्रारम्भ करके शनैः शनैः चरम उत्कर्ष की ओर अग्रसर होना चाहिए।

1.6.4 विवरण प्रविधि की सीमाएँ

विवरण प्रविधि का उपयोग निम्नलिखित सीमाओं को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

1. इसका प्रयोग शिक्षक को अधिक सक्रिय बनाता है और छात्रों को श्रोता।
2. इसकी भाषा रोचक, बोधगम्य, शुद्ध और उपयुक्त नहीं है तो विवरण का महत्व धीरे-धीरे घटने लगता है।
3. विवरण प्रविधि के अत्याधिक प्रयोग से पाठ नीरस लगने लगता है।
4. विवरण की प्रासंगिकता एवं पर्याप्तता के बारे में निर्णय लेना शिक्षकों के लिए कभी-कभी काफी कठिन हो जाता है।
5. इसके प्रयोग के लिए विशेष दक्षता विशिष्टीकरण आवश्यक है।
6. विवरण को प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है विवरण की रोचकता, ग्रहणशीलता तथा इस प्रस्तुत करने की शैली का पूरा ध्यान दिया जाए।

गतिविधि – 6

शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में एक दिन के लिए छात्रों को शिक्षक बनने का मौका दे जिससे वह कार्य के प्रति सक्रीय होना सीखे।

अभ्यास कार्य

प्र.1 विवरण प्रविधि का प्रयोग करते समय कौन सी सावधानियाँ रखनी चाहिए ?

1.7 व्याख्यात्मक

1.7.1 व्याख्यात्मक लेखन के प्रमुख सोपान –

- सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर पढ़ना।
- जानकारी।
- विषय ज्ञान।
- मुख्य अवधारणाओं एवं विचारों को पहचानना एवं योजनाबद्ध रूप से नोट करना।
- मूल पाठ/विषय के सारांश को समझना।
- लेखन में शैली का उपस्थित होना।
- विषय विशिष्ट शब्दावली एवं स्वरूप।
- मूल पाठ के संदर्भ में व्याख्यात्मक कौशल की आवश्यकता।
- मूल पाठ का पुनर्विचार एवं सारांश लिखना।

➤ सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर पढ़ना

छात्राध्यापक को किसी भी विषय-वस्तु को पढ़ाते समय सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर उसकी अवधारणा का बोध कराना होगा अर्थ समझने के लिए उसे कई बार पढ़ा जाता है व स्पष्ट होने के बाद ही आत्मसात हो पाता है।

- **जानकारी** – छात्राध्यापक को अपने विषय की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। जब शिक्षण विषय के आधार पर समूह बना दिया जाता है तो छात्राध्यापकों को जोड़े के रूप में विषय को पढ़ना व समझना पड़ता है। जिससे उन्हें विषय से सम्बंधित जानकारी होती है। जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं से भी ज्ञान अर्जित किया जा सकता है।
- **विषय ज्ञान** – व्याख्यात्मक लेखन से जुड़ने के लिए छात्रों को विषय का ज्ञान आवश्यक है। लेखन के कुछ आधार होना आवश्यक है। यह आधार हमें विषय के ज्ञान के रूप में प्राप्त होता है। लेखन विषय ज्ञान पर ही अवलम्बित होता है। छात्र को अपनी रुचि, आयु तथा योग्यता के अनुसार विषय का ज्ञान अर्जित करके लेखन से जुड़ना चाहिए व्याख्यात्मक लेखन में यही अर्जित ज्ञान उसका आधार बनता है इसके लिए वाचन की आदत भी डालनी चाहिए तथा इसके लिए छात्र का शब्द भण्डार भी अच्छा होना चाहिए।
- **मुख्य अवधारणाओं एवं विचारों को पहचानना एवं उनको योजनबद्ध रूप से नोट करना**
लेखन कार्य में दक्षता बढ़ाने के लिए मूल पाठ की मुख्य अवधारणाओं तथा विचारों को पहचानना चाहिए तथा उन अवधारणाओं और विचारों को नोट करना चाहिए जिससे अपने विचारों का समावेश करते हुए लेखन कार्य कर सकें। मुख्य अवधारणाओं तथा विचारों को लेखन में प्रस्तुत करते समय चार्ट तथा नक्शे का प्रयोग किया जा सकता है।
- **मूल पाठ/विषय के सारांश को समझना**
मूल पाठ को सारांश के रूप में समझ लेने से लेखन कार्य करते समय कोई भी महत्वपूर्ण घटना या चरित्र नहीं छूटेगा। लापरवाही, अभ्यास की कमी आदि से लेखन में अशुद्धियों को जन्म देती है।
- **लेखन शैली का उपस्थित होना** – लेखक की एक विशेष शैली होती है यह शैली उसके सभी लेखों में दिखाई पड़ती है। जिस प्रकार भाषा किसी भी लेख का मुख्य घटक होती है। उसी तरह प्रत्येक रचनाकार के लेख में एक विशिष्ट शैली भी होती है। इसे लेख का एक अंग बनाना चाहिए।

उत्तम लेखन शैली की विशेषताएँ

- लिखते हुए स्वाभाविक भाषा का प्रयोग।
- प्रसंगानुकूल शब्दों, मुहावरों का संगत प्रयोग कर सकें।
- वर्णन में चित्रात्मक भाषा का प्रयोग कर सकें।
- शब्दों का संतुलित एवं सारगर्भित प्रयोग कर सकें।
- अधिक क्लिष्ट एवं जटिल शब्दों के प्रयोग से बचें।
- विषय विशिष्ट शब्दावली एवं स्वरूप लिखते समय विषय के अनुसार समूह का विभाजन होने से यह लाभ होता है। विषय विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग किया जा सकता है, ये विशिष्ट शब्द विषय विशेषज्ञों को अधिक अच्छी तरह से ज्ञात होते हैं। छात्रों का भाषा ज्ञान तथा शब्द ज्ञान बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।
- **मूल पाठ के संदर्भ में व्याख्यात्मक कौशलों की आवश्यकता** मूल पाठ से छात्र को क्या शिक्षा प्राप्त हो रही है। इसके लिए उनमें व्याख्यात्मक कौशल होना चाहिए अतः विषय वस्तु के संदर्भ में व्याख्या स्पष्टीकरण, संश्लेषण, विश्लेषण तथा वाद विवाद आदि व्याख्यात्मक कौशल विकसित करने का प्रयास करना चाहिए इसके लिए छात्रों से

उनका स्पष्टीकरण प्रकरण के अंशों की व्याख्या करानी चाहिए लिखित रचना से पूर्व छात्र मूल पाठ की एक रूपरेखा बनाए ताकि वे विषय से बाहर न हटें व्याख्यात्मक कौशल के अन्तर्गत :- पात्र, प्रयोजन, कथावस्तु, कथनोपकथन, चरित्र चित्रण, भाषा-शैली, भाव सौन्दर्य आदि का उल्लेख किया जाना चाहिए जिससे सम्पूर्ण लेख की विशेषताएँ सुस्पष्ट हो सकें।

● **मूल पाठ का पुनर्विचार एवं सारांश लिखना** – विषय आधारित लेखन कार्य कराते समय छात्रों से मूल पाठ पर पुनर्विचार आमंत्रित किए जा सकते हैं। सम्पूर्ण पाठ का सारांश लिखवाया जा सकता है यह व्यक्तिगत आधार पर प्रत्येक छात्र को दिया जा सकता है इससे उनमें विषय का विश्लेषण करने की क्षमता का विकास होगा ज्ञान वृद्धि के साथ कौशलों में भी वृद्धि होगी उनमें चिन्तन तथा मनन क्षमता का विकास होगा।

● **पुनरावलोकन से आशय** – इसे पुनर्विचार या समीक्षा भी कहा जाता है इसका आशय फिर से विचार करने तथ्यों को स्मरण करने उनकी समीक्षा करने तथा महत्वपूर्ण निष्कर्षों तक पहुँचने से है रिक्यू के माध्यम से शिक्षक अपने पाठ को तैयार कर पुनः उन बिन्दुओं पर विचार करता है यह जानने का प्रयास करता है कौन सा प्रकरण छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है कितने पाठ पढ़ा दिए गये हैं कितने शेष हैं पुनरावलोकन शिक्षक को अपने शिक्षण के दोष भी बताता है।

● पुनरावलोकन के सामान्य रूप से निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है –

1. मौखिक पुनरावलोकन
2. लिखित पुनरावलोकन
3. समस्या पुनरावलोकन
4. सामान्य पुनरावलोकन

● पुनरावलोकन की विशेषताएँ –

1. यह उच्च कक्षाओं के लिए प्रभावशाली है।
2. इसके माध्यम से शिक्षक उद्देश्य प्राप्ति तक पहुँच जाता है।
3. यह ज्ञान को स्थायी बनाने में सहायक
4. इसमें औपचारिकता अधिक होती है।
5. तथ्य की समीक्षा की जा सकती है।
6. छात्रों में विश्लेषण संश्लेषण की क्षमताओं का विकास।
7. छात्र तथा शिक्षक दोनों ही सक्रिय रहते हैं।
8. छात्रों में पुस्तकालय में पढ़ने की आदत का विकास।
9. शोध कार्यों में यह अत्यन्त उपयोगी।
10. आंतरिक मूल्यांकन में उपयोगी।

● सुझाव –

1. छात्रों को योग्यतानुसार पुनरावलोकन के प्रकरण दिए जाए।
2. समय भी निश्चित होना चाहिए
3. उद्देश्य निश्चित किए जाने चाहिए कि पुनरावलोकन क्यों किया जा रहा है।
4. प्रकरण देते समय संदर्भ ग्रन्थों की प्राप्ति भी ध्यान में रखनी चाहिए
5. पुनरावलोकन छात्रों के कार्य का भी किया जाना चाहिए

● **मूल पाठ का सारांश** – विषय आधारित लेखन के लिए छात्रों से मूल पाठ का सारांश लिखवाना चाहिए। यह कार्य छात्रों को व्यक्तिगत निर्देश देकर व्यक्तिगत तौर पर करना चाहिए सारांश लिखवाते समय छात्रों की टिप्पणी और उनकी उस विषय पर राय भी पूछनी चाहिए इससे छात्र पाठ को अच्छी तरह से पढ़ेंगे अन्यथा न तो वे उसका सारांश

लिख पायेंगे और न ही उसके विषय में कोई टिप्पणी अथवा राय दे पायेंगे। सारांश लिखने के लिए छात्रों को निम्नलिखित निर्देश दिए जा सकते हैं :-

- मूल पाठ को दो से तीन बार अच्छे से पढ़ें।
- इसमें महत्वपूर्ण विषयों तथा संवादों को रेखांकित करें।
- पुनः पाठ पढ़ें, यह देखने के लिए कि महत्वपूर्ण सन्देश या घटना छूट तो नहीं गई।
- सभी रेखांकित वाक्यों को क्रम से श्रृंखलाबद्ध करें और सारगर्भित शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने शब्दों में संक्षिप्त सार लिखें।

यह कार्य व्यक्तिगत रूप से दे जिससे सभी छात्र अपनी योग्यता तथा क्षमता के अनुसार अपने पढ़ने लिखने तथा संवाद के कौशलों का विकास कर सकें व विषय पर चिन्तन व मनन करें इससे उन्हें याद होने के साथ बोधगम्यता भी बढ़ जायेगी।

गतिविधि – 7

शुद्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित करवाई जाए।

अभ्यास कार्य

प्र.1 एक उत्तम लेखन शैली की विशेषताएँ बताइए ?

प्र.2 मूल पाठ पर पुनर्विचार किस प्रकार किया जा सकता है ?

1.8 वर्णनात्मक

वर्णन में छात्र किसी घटना, दृश्य, किसी स्थान आदि का विस्तार से वर्णन करता है यह वह प्रविधि है जिसके माध्यम से किसी विषय वस्तु एवं घटना का छात्रों के सामने पूर्व शाब्दिक

चित्र पेश किया जाता है इसके माध्यम से किसी घटना, दृश्य तथा नियम एवं सिद्धांतों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है इस तरह वर्णन में रोचकता का समावेश हो जाता है एवं छात्र भाषा पर पर्याप्त अधिकार पा लेते हैं। अभिव्यक्ति शैली में नवीनता एवं विलक्षणता आ जाती है। इसके लिए उन्हें अतिरिक्त परिश्रम एवं तैयारी करनी पड़ती है। वर्णन को विस्तृत विवरण कहना ज्यादा उपयुक्त है। वर्णन एक कला है तथा सजीव रोचक वर्णन करना एक दक्षता अथवा कौशल है।

1.8.1 वर्णन प्रविधि की विशेषताएँ

इसका एक विशिष्ट उद्देश्य होता है उसी को ध्यान में रखकर इसका सम्पादन किया जाता है –

- इसमें एक ही समय में अधिकांश व्यक्तियों के सम्बंध में आंकड़े प्राप्त किये जाते हैं।
- इसका सम्बंध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण जनसंख्या से होता है।
- इसमें विशिष्ट एवं कल्पनात्मक नियोजन आवश्यक।
- इसमें आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण में विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता।
- इसे शाब्दिक तथा गणितीय सूत्रों से भी व्यक्त किया जा सकता।
- इसमें किसी वैज्ञानिक नियम का निर्धारण नहीं किया जाता बल्कि समस्या समाधान के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं।
- इसमें सदैव स्पष्ट एवं परिभाषित समस्या पर ही कार्य किया जाता है।

1.8.2 वर्णन की प्रभावोत्पादकता

इसे प्रभावपूर्ण बनाने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- अच्छी वर्णन शैली के तत्व-भावों में उतार-चढ़ाव, मुद्रा विन्यास, स्वर को आरोह-अवरोहकता।
- विषय से तादात्म्य स्थापित करने के लिए आवश्यक है – छात्रों के मानसिक स्तर से सम्बंध जोड़ना, सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बंध जोड़ना।
- वर्णन प्रभावशाली होगा यदि – वर्णन स्वयं में सम्पूर्ण, सर्वांगपूर्ण, व्यापक, बहुपक्षीय

1.8.3 वर्णन प्रविधि का प्रयोग करते समय सावधानियाँ

इसका प्रयोग करते समय शिक्षक को कुछ सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए :-

- वर्णन करने से पूर्व पूरी रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
- वर्णन रोचक, मनोरंजक तथा आकर्षक शैली में किया जाना चाहिए।
- वर्णन में क्लिष्टता से बचना चाहिए।
- वर्णन प्रसंग के अनुसार हो।
- आवश्यक उदाहरण एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग।
- वर्णन में पूर्णता एवं व्यापकता होगी चाहिए।

1.8.4 वर्णन प्रविधि की सीमाएँ

इसे शिक्षक कुछ सीमाओं के साथ ही प्रयोग कर सकता है :-

- शिक्षक छात्रों की अपेक्षा अधिक सक्रिय होता है।
- यह न अधिक लम्बा और न अधिक बढ़ा होना चाहिए।
- इसका अधिक प्रयोग पाठ को नीरस बनाता है।

- वर्णन की भाषा उपयुक्त न होने से शिक्षण यान्त्रिक बन जाता है।
- वर्णन की पर्याप्तता, यथेष्टता तथा व्यापकता का निर्णय करने के लिए शिक्षक में सूझबूझ होना आवश्यक है।

गतिविधि – 7

सांस्कृतिक त्यौहार मनाने के बाद आए छात्रों को उसका सचित्र वर्णन कक्षा में करने को कहा जाए (प्रोजेक्ट)

अभ्यास कार्य

प्र.1 वर्णन प्रविधि की सीमाएँ बताइए ?

प्र.2 वर्णन प्रविधि का प्रयोग करते समय कौन-कौन सी सावधानियाँ रखनी चाहिए ?

1.9 तर्कशीलता

1.9.1 तर्कशीलता का विकास :- बालक निरीक्षण द्वारा अनेक तथ्यों को एकत्रित करता है तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन कर तर्कशक्ति को विकसित करता है। जिस तरह गद्य और पद्य की शिक्षण विधियों में अन्तर होता है।

गद्य शिक्षण का उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों को ज्ञान में वृद्धि करना।
- विद्यार्थियों में अर्थ की समझ में वृद्धि करना।
- बोधभाव का विकास करना।
- विद्यार्थियों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना है।

पद्य शिक्षण का उद्देश्य :-

- कविता का पाठ हृदयंगम करना।
- कवि के कल्पना लोक में विचरण करना।
- कवि के शब्दों को जादू के समान अनुभव करना।

1.9.2 गद्य और पद्य में तुलना

पद्य शिक्षण	गद्य शिक्षण
सौन्दर्यानुभूति का विकास	भाषा सम्बंधी ज्ञान, बौद्धिक विकास
भावनाओं का परिष्करण	शब्द भण्डार तथा सूक्ति भण्डार की वृद्धि
	अ. वाक्य प्रयोग द्वारा
	ब. खण्ड शब्द द्वारा व्याख्या द्वारा
	स. समास-विग्रह द्वारा
	द. सन्धि विच्छेद द्वारा
	य. उपसर्ग द्वारा, सहचर शब्दों द्वारा
नीति प्रदायक अन्यतम साधन	अन्तर्कथा द्वारा, उदाहरण द्वारा
कल्पना का विकास	पर्यायवाची
सर्वोच्च कला	घटना द्वारा
आन्तरिक अभिव्यक्ति	उदाहरण द्वारा विचार विश्लेषण
प्रत्येक शब्द में सन्देश	विलोम शब्दों द्वारा
व्यक्तित्व का पूर्ण विकास	प्रश्नों द्वारा विकास
बौद्धिक विकास	व्याकरण की प्रधानता
अनेकत्व में एकत्व	
समानान्तर, उदाहरण	
अभ्यास करना	
व्याकरण का महत्व नहीं	

1.9.3 निरीक्षण द्वारा तर्कशक्ति का विकास

बालक निरीक्षण द्वारा अनेक तथ्यों को एकत्रित करता है तथा तुलनात्मक अध्ययन द्वारा तर्कशक्ति का विकास करता है। निरीक्षण प्रविधि में अध्यापक बालकों के कार्यों का व्यक्तिगत पर्यवेक्षण करता है। बालक कठनाईयों को अध्यापक के समक्ष सहायता एवं निर्देशन के लिए रखता है। कुछ विद्वानों के अनुसार पर्यवेक्षित विधि में बालक के प्रत्येक कार्य का निरीक्षण अभीष्ट रहता है किन्तु वह बड़ा ही व्यापक एवं उदार विचार हैं। व्यवहारिक दृष्टि से विचार करने पर यह मत खंडित हो जाता है। बालक की प्रत्येक क्रिया का निरीक्षण करना असम्भव होता है। अतः अधिक व्यवहारिक दृष्टिकोण यह है कि बालकों को किसी निश्चित कार्य का आदेश देकर उसकी क्रियाओं का निरीक्षण किया जाए अध्यापक यह ध्यान रखे कि उसे यह कार्य मार्ग-प्रदर्शन तथा मित्र के रूप में करना है इसका प्रयोग निम्न प्रकार से किया जाता है।

अ. ऐसे बालकों को ध्यान में रखकर जो अन्य बालकों की अपेक्षा पिछड़े हुए हैं।

ब. समस्त बालकों को ध्यान में रखकर।

स. छात्रों को परिपाक का अवसर देकर।

1.10 पठन (वाचन)

1.10.1 अर्थ एवं परिभाषा :- जब कोई छात्र पठन करता है तो उस समय वह एक पुस्तक और पत्रिका अथवा कापी को देख रहा होता है सामान्यतः लिखित भाषा को बाँचने की क्रिया को पढ़ना या पठन कहा जाता है।

कैथरीन ओकारन “पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है जिसमें दृश्य श्रव्य एवं गतिवाही सर्किहो का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बंध निहित है।”

डोनल मायल “पठन और लेखन की तुलना करते हुए लिखते हैं कि लिखने में मौखिक भाषा को स्थाई रूप प्रदान किया जाता है और पठन में ठीक उसका उलटा किया जाता है।”

भाषा शिक्षण के संदर्भ में पढ़ने का अर्थ होता है किसी के द्वारा लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव तथा विचारों को पढ़कर समझना अतः यह कहा जा सकता है कि “वाचन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक, ध्वनि और अर्थ साथ-साथ चलते हैं।”

हिन्दी के अध्यापकगण के अनुमान से अक्षर बोध द्वारा पढ़ना आ जाता है परन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं है। इसका मनोवैज्ञानिक कारण है जब हम पढ़ना आरम्भ करते हैं तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क कक्ष में क्रमबद्ध होकर एकत्रित हो जाते हैं और हमें उच्चारण का स्मरण आता है।

1.10.2 वाचन का महत्व

- वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता है।
- वाचन एक कला है जिसकी ऊँच-नीच, निर्धन धनवान सभी को आवश्यकता पड़ती रहती है।
- वाचन की योग्यता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनंद नहीं ले सकता।
- जीवन-चरित्र इतिहास, काव्य, कहानियाँ, लेख, उपन्यास, नाटक मनुष्य के लिए जिस उद्देश्य से लिखे जाते हैं उनका पूरा लाभ स्वयं पढ़कर उठाया जा सकता है।
- भाषा के द्वारा इस साहित्य के विशाल साम्राज्य में प्रवेश करते हैं जिसमें हमें अलौकिक आनंद मिलता है।
- भाषा की शुद्धता एवं सहायता से हमें वार्तालाप का ढंग आता है।
- इससे हम समाज देश और जाति के योग्य नागरिक हो सकते हैं।
- वाचन द्वारा अन्य लोगो को लाभ पहुँचा सकते हैं।
- वाचन में पढ़ने की अपेक्षा शुद्धता-स्पष्टता तथा प्रभावोत्पादकता अधिक होती है।

1.10.3 वाचन के उद्देश्य

वाचन शिक्षण के समय निम्न उद्देश्यों का ध्यान रखना चाहिए :-

- बालकों को स्वर के आरोह-अवरोह का अच्छी तरह से अभ्यास कराया जाए।
- बालक स्वयं अपने मन के भाव व्यक्त करते हुए भावानुसार स्वर का उचित आरोह-अवरोह साध सकें।
- वाचन प्रभावोत्पादक हो जिससे उद्देश्य की प्राप्ति सफलतापूर्वक हो।
- पुस्तक पढ़कर बालक उसका भाव समझ सके एवं दूसरों को समझा सकें।

1.10.4 वाचन की विशेषता :- अच्छे वाचन में निम्नलिखित विशेषताएँ होना आवश्यक है :-

- मधुरता प्रभावोत्पादकता एवं चमत्कारपूर्ण ढंग से आरोह-अवरोह के साथ वाचन होना चाहिए।
- प्रत्येक शब्द को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारित करना।
- प्रत्येक शब्द को पृथक् करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना।
- वाचन में सुन्दरता के साथ प्रवाह बनाये रखना।
- उचित भाव-भंगिमाओं का होना।

1.10.5 वाचन के आधार :- (i) वाचन मुद्रा, (ii) वाचन शैली

वाचन मुद्रा :-

1. बैठने खड़े होने का ढंग
2. वाचन सामग्री हाथ में पकड़ने का तरीका
3. भावानुसार हाथ
4. नेत्रों का संचालन

वाचन शैली - भावानुसार स्वर के उचित आरोह अवरोह के साथ पढ़ना।

वाचन सामग्री - वाचन के लिए निम्नलिखित सामग्री उपादेय होगी।

1. निबंध - (i) निबंध प्रधान, भाव, प्रधान, व्यंग्य एवं विनोद प्रधान, व्यक्तिपरक एवं विषय परक निबंध

(ii) निबंध के विषय

- सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं से सम्बंधित निबंध।
- खोज एवं साहस से सम्बंधित निबंध।
- सरल मनोवैज्ञानिक निबंध।
- वैज्ञानिक निबंध।
- देश प्रेम एवं संस्कृति से सम्बंधित निबंध।
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित।
- प्रकृति से सम्बंधित।

2. संस्मरण, शब्दचित्र।

3. आत्मकथा, जीवनी, डायरी, पत्र।

4. नाटक, एकांकी, संवाद।

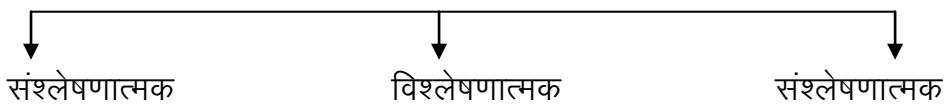
5. कहानी, चरित्र प्रधान, वातावरण-प्रधान, समस्या प्रधान।

6. उपन्यास।

7. कविता।

1.10.6 वाचन शिक्षण की विधियाँ

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वाचन की विधियों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है।



विधियाँ



- (i) वर्णमाला पद्धति
- (ii) ध्वन्यात्मक पद्धति
- (iii) अक्षर पद्धति

विधियाँ

विश्लेषणात्मक अथवा
समाहारक विधियाँ

शिक्षा — जगत में वाचन की शिक्षा के लिए अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से निम्नलिखित मुख्य है —

- देखो और कहो विधि
- अक्षर बोध विधि
- ध्वनि-साम्य विधि
- अनुध्वनि विधि
- भाषा-शिक्षण की यन्त्र विधि
- समवेत पाठ विधि
- संगति विधि

1. **देखो और कहो विधि** — इसमें एक पूरा शब्द श्यामपद पर लिख दिया जाता है। अक्षरों की पहचान के स्थान पर शब्द के स्वरूप की पहचान करवाई जाती है इस प्रणाली का यह दोष है कि शब्द के रूप और प्रयोग में धोखा हो जाता है जैसे मर्म का धर्म अथवा धर्म का मर्म।
2. **अक्षर बोध विधि** — इसमें वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण के स्थानानुसार सज्जित है जब वर्ण पहचान लेता है तो उसे शब्द दे दिए जाते हैं। जैसे क, म, ल अक्षरों से कमल शब्द बनता।
3. **ध्वनि साम्य विधि** — इसमें एक समान उच्चारण वाले शब्द सिखाए जाते हैं। जैसे क्रम, श्रम, भ्रम आदि।
4. **अनुध्वनि विधि** — इसमें एक समान उच्चरित शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं। इसमें शिक्षक एक शब्द कहता है छात्र शब्द की ध्वनि का अनुसरण करता है।
5. **भाषा शिक्षण की यन्त्र विधि** — इसमें ग्रामोफोन के तबे में पाठ भरा जाता है जिसे बालक सुनकर अनुकरण करके पढ़ने का अभ्यास करता है इससे उच्चारण में एकरूपता और पढ़ने के क्रम में समता आ जाती है।
6. **समवेत पाठ विधि** — अध्यापक पाठ के अंश को भावपूर्ण तरीके से पढ़ता है व सभी एक साथ उसकी आवृत्ति करते हैं।
7. **संगति विधि** — इसका प्रयोग मान्टेसरी ने किया था इसमें बहुत सी वस्तुओं चित्रों, खिलौनों आदि के आगे उनके नाम कार्ड पर लिखकर रखे जाते हैं फिर कार्ड फेंक दिया जाता है व बच्चों से कहा जाता है जिस वस्तु का जो नाम है उसके आगे वही कार्ड रखकर आए। खेल होने के कारण इसे शिक्षा में सम्मिलित नहीं किया गया।

1.10.7 वाचन शिक्षण में सावधानियाँ

वाचन के समय शिक्षक को निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए

1. वाचन के समय टोकना नहीं चाहिए।
2. आरम्भ से ही बालक के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान दिया जाए।
3. अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
4. छात्रों को उपयोगी पुस्तक कहानी तथा पत्र पत्रिकाएँ उपलब्ध करायी जाए।

1.10.8 सुन्दर वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें।

1. कोहनी पर 45 का कोण बनाती हुई पुस्तक बाएँ हाथ में आँखों से लगभग 1 फीट की दूरी पर हो।
2. पढ़ते समय आँखें निरन्तर पुस्तक पर न हो बीच-बीच में सामने भी देखा जाए।
3. वाचन के समय उचित ठहराव देकर पढ़ना चाहिए।
4. पढ़ने की गति न बहुत मन्द न तेज।
5. स्वर प्रवाह व कर्णप्रिय हो।
6. शब्द का उच्चारण स्पष्ट हो।
7. वाक्यों में भावों के साथ उतार चढ़ाव रहे।
8. वाचन के समय अधिक गति अच्छी नहीं।
9. पाठ का आरम्भ व अंत मंद स्वर में होना चाहिए।
10. वाचन के समय मेज आदि का सहारा न ले।
11. अशुद्धियों को बालकों से ही दूर करवाए।

1.10.9 वाचन दोषों को दूर करने की विधियाँ

- आवृत्ति पुनरावृत्ति
- स्थान परिवर्तन
- अस्पष्टता निवारण
- चिकित्सा कराना

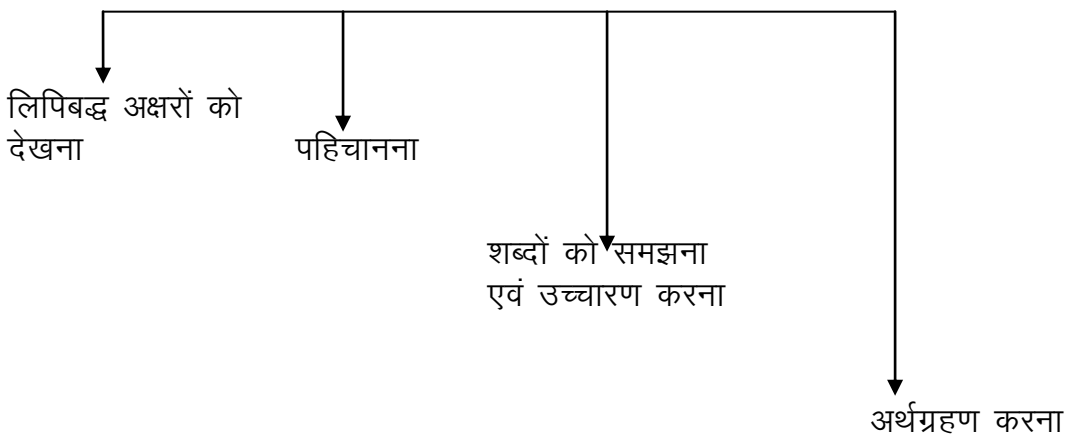
1.10.10 वाचन के प्रकार

- सस्वर वाचन
- मौन वाचन

सस्वर वाचन :- इन्हें दो भागों में विभक्त किया गया है।

- i. वैयक्तिक
- ii. समवेत

अर्थ - स्वर सहित वाचन को सस्वर वाचन कहा जाता है। इसमें पढ़ने के साथ-साथ बोला भी जाता है। इसमें चार क्रियाएँ होती हैं।



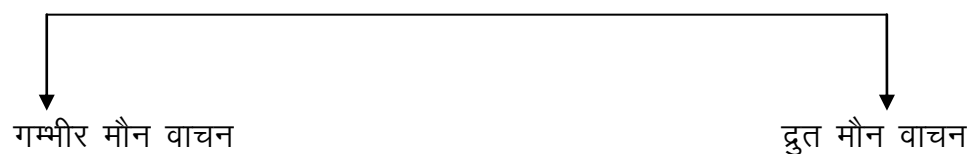
मौन वाचन :- मौन वाचन का अर्थ है बिना होठ हिलाये चुपचाप पढ़ना व अधिक से अधिक अर्थ ग्रहण करना। ध्यान देने योग्य बातें :-

1. शांतिपूर्ण वातावरण
2. वाचन की मुद्रा

3. धैर्य की भावना
4. विकसित शब्दकोश
5. एकाग्रता
6. उचित प्रवाह तथा गति का ध्यान

मौन वाचन के प्रकार

मौन वाचन के दो प्रकार हैं :-



गतिविधि – 8

प्र. कक्षा में वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए उसमें नियम बनाए जाए व छात्रों को पुरस्कार दिया जाए।

अभ्यास कार्य

प्र.1 वाचन का अर्थ समझाइये ?

प्र.2 वाचन शिक्षण के आधार बताइए ?

1.11 अपनी प्रगति की जांच करें :-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.1 भारत में कृषि शिक्षा हेतु कितने विश्वविद्यालय हैं ?

क. 10, ख. 20, ग. 15, घ. 25

उत्तर ख.

प्र.2 शिक्षा विकास के संसाधनों को कितने भागों में विभाजित किया गया है ?

क. 5, ख. 4, ग. 6, घ. 8

उत्तर क

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1 चिन्तन की योग्यताओं का विकास छात्रों में किस प्रकार किया जा सकता है ?

उत्तर – आधुनिक काल में चिंतन की योग्यता के विकास की आवश्यकता

- ज्ञान का विस्तार तथा उसे आत्मसात करने में कठनाई।
- आधुनिक शाक्तिशाली संचार के माध्यमों के सम्मुख व्यक्ति की क्षुद्रता।
- विघटित होता समाज तथा टूटते मूल्य।
- अपने राष्ट्र तथा विश्व की संकटाकुल स्थिति। भारत में आजकल के किशोरों का भविष्य।
- विज्ञान का एक सीमा पर जाकर असमर्थ हो जाना।

प्र.2 समीक्षात्मक योग्यता का विकास छात्रों में किस प्रकार किया जा सकता है ?

उत्तर – समीक्षात्मक योग्यता

- भावपूर्ण मार्मिक स्थालों को पहचान सकना।
- रचना को प्रभावशाली बनाने वाले प्रयोगों एवं अभिव्यक्ति के सौन्दर्य को पहचान सकना।
- पाठ्य-वस्तु के विचारों तथा मूल्यों को परख सकना।
- पेश पाठ्य-वस्तु की तुलना पूर्वपठित वस्तु से कर सकना।
- लेखक द्वारा व्यक्त भावों अथवा विचारों से अपनी सहमति या असहमति प्रकट कर सकना।
- भाषा की विशेषता को पहचान सकना।
- तत्वों के आधार पर पठित-कहानी, नाटक, एकांकी की सामान्य समीक्षा कर सकना विशेषता
अग्रांकित दृष्टियों से (i) कथानक (ii) चरित्र चित्रण (iii) संवाद
- कविता के सौन्दर्य तत्वों का बोध तथा उनकी रसानुमूति।
- पठित रचना पर अपना स्वतंत्र विचार प्रकट कर सकना।

प्र.3 विज्ञान शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ के बारे में लिखिए ?

उत्तर – विज्ञान शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ

विज्ञान के विकास के मार्ग में जो बाधाएँ हैं, वे निम्न प्रकार हैं :-

- नियोजन एवं योजनाबद्ध कार्यक्रम का अभाव।
- विज्ञान शिक्षा को आधार प्रदान करने के लिए अनिवार्य सामान्य शिक्षा में गुणात्मक सुधार की आवश्यकता।

- विज्ञान द्वारा वांछनीय प्रवृत्तियों का विकास न होना तथा सरकारी नौकरियों की अधिक लालसा।
- विज्ञान शिक्षा के लिए कुशल अध्यापकों का आभाव।
- माध्यमिक स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा का आभाव।
- छोटे तथा मध्यम स्तर पर तकनीशियनों का आभाव।
- भारत में आपार मानव शक्ति का समुचित उपयोग न हो पाना।
- अनुपयुक्त पाठ्यक्रम।
- शिक्षा का माध्यम।
- विज्ञान शिक्षा तथा उद्योगों में सहयोग का आभाव।
- विज्ञान के आधुनिकीकरण की समस्या।
- अनुसन्धान के अपर्याप्त संसाधन।
- आधुनिकीकरण के कारण नवीन समस्याओं का उदय।
- बेरोजगारी की समस्या।

प्र.4 कृषि विकास में आने वाली समस्याओं को लिखिए?

उत्तर – भारतीय कृषि के विकास में कुछ प्रमुख समस्याएँ निम्न प्रकार हैं:—

- कृषि पर जनसंख्या का बढ़ा हुआ भार
- कृषकों का परम्परावादी दृष्टिकोण
- कृषकों का अशिक्षित होना
- वित्तीय संसाधनों का आभाव
- साहूकारों का नियंत्रण
- दोषपूर्ण विपणन व्यवस्था
- उत्पादन की पिछड़ी तकनीकें
- उत्तम बीजों का कम प्रयोग
- सिंचाई सुविधाओं की अपर्याप्तता
- मानसून पर अधिक निर्भर
- फसलों की सुरक्षा का आभाव
- कृषि शिक्षा का आभाव
- कृषि अनुसन्धानों की कमी

प्र.5 विवरण का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर – **विवरण देने का उद्देश्य**

छात्रों के मस्तिष्क में एक मानचित्र बनाना। **सक्सेना के शब्दों में** विवरण देना एक कला है इस कला में निपुण होने के लिए शिक्षक अपनी कल्पना शक्ति का सहारा लेते हुए किसी वस्तु अथवा घटना का विवरण इतने उत्साह तथा प्रवाहशीलता के साथ प्रस्तुत करता है कि कक्षा के सभी छात्रों को इसका ज्ञान सरलतापूर्वक हो जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.6 वाचन का अर्थ बताते हुए उसे परिभाषित कीजिए?

उत्तर — **अर्थ एवं परिभाषा** :— जब कोई छात्र पठन करता है तो उस समय वह एक पुस्तक और पत्रिका अथवा कापी को देख रहा होता है सामान्यतः लिखित भाषा को बाँचने की क्रिया को पढ़ना या पठन कहा जाता है।

कैथरीन ओकारन “पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है जिसमें दृश्य श्रव्य एवं गतिवाही सर्किहो का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बंध निहित है।”

डोनल मायल “पठन और लेखन की तुलना करते हुए लिखते हैं कि लिखने में मौखिक भाषा को स्थाई रूप प्रदान किया जाता है और पठन में ठीक उसका उलटा किया जाता है।”

भाषा शिक्षण के संदर्भ में पढ़ने का अर्थ होता है किसी के द्वारा लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव तथा विचारों को पढ़कर समझना अतः यह कहा जा सकता है कि “वाचन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक, ध्वनि और अर्थ साथ-साथ चलते हैं।”

हिन्दी के अध्यापकगण के अनुमान से अक्षर बोध द्वारा पढ़ना आ जाता है परन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं है। इसका मनोवैज्ञानिक कारण है जब हम पढ़ना आरम्भ करते हैं तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क कक्ष में क्रमबद्ध होकर एकत्रित हो जाते हैं और हमें उच्चारण का स्मरण आता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्र.1 भारत में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण जो परिवर्तन हुए हैं उन्हें विस्तार से लिखें?

उत्तर — **औद्योगीकरण एवं नगरीकरण** आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक प्रक्रिया है। यह एक दूसरे के कारण तथा परिणाम है। जब किसी क्षेत्र में उद्योग धन्धे विकसित हो जाते हैं तथा मशीनों के द्वारा बड़े-बड़े मिल एवं कारखानों में उत्पादन कार्य होने लगता है तब वहां पर नगरीकरण की प्रक्रिया तेजी से क्रियाशील होती है। भारत में अनेक नगरों का विकास इसी प्रकार हुआ है इस अर्थ में औद्योगीकरण नगरीकरण का कारण होता है इसके विपरीत जब सुविधाओं की अधिक से अधिक उपलब्धता या अन्य कारणों से कोई ग्रामीण क्षेत्र या समुदाय नगर का रूप धारण कर लेता है तो वहाँ पर धीरे-धीरे उद्योग धन्धे भी पनपने लगते हैं इस स्थिति में औद्योगीकरण नगरीकरण का परिणाम होता है। इस प्रकार औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रियाएँ एक दूसरे से सम्बंधित ही नहीं, बल्कि एक दूसरे की पूरक भी हैं। अतः इन दोनों के सामाजिक आर्थिक प्रभाव भी प्रायः एक जैसे ही होते हैं। आज भारत में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के फलस्वरूप जो परिवर्तन हुए हैं तथा जो गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं वे निम्नांकित हैं :—

(क) सामाजिक जीवन में परिवर्तन

1. सामुदायिक जीवन का हास	2. व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का विकास
3. सामाजिक मूल्यों एवं संबंधों में परिवर्तन	4. जाति प्रथा का निर्बल होना तथा अंतरजातिय विवादों का प्रचलन
5. स्थान की कमी के कारण गन्दी बस्तियों का विकास	6. रोजगार में पुरुषों की अधिकता के कारण स्त्री-पुरुष अनुपात में अन्तर
7. मनोरंजन की व्यापारीकरण	8. मानसिक चिन्ता, दुर्घटना बीमारी एवं रोगों में वृद्धि

9. अपराध, व्यभिचार संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा में वृद्धि	10. भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदूषण की समस्या
---	---

(ख) पारिवारिक जीवन में परिवर्तन

1. संयुक्त परिवारों का विघटन एवं एकाकी परिवारों का उदय	2. स्त्रियों का घर से बाहर काम करना
3. पारिवारिक नियंत्रण एवं महत्व में कमी आना	4. प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विलम्ब विवाह एवं तलाक का बाहुल्य

(ग) धार्मिक जीवन में परिवर्तन

- परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन एवं नवीन मूल्यों का विकास
- धार्मिक संकीर्णता में कमी तथा सहनशीलता में वृद्धि
- नैतिक आचरण में कमी

(घ) राज्य के कार्यों में परिवर्तन

- नये श्रमिक वर्ग का उदय एवं उनकी समस्याएँ
- नई कॉलोणियों एवं बस्तियों की व्यवस्था
- स्त्री-श्रमिकों के वेतन छुट्टी
- बाल-श्रमिकों के शोषण की समस्या एवं सुरक्षा की समस्या
- शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति की समस्या

(ङ) ग्रामीण समुदायों में परिवर्तन

- गाँवों में रोजगार की कमी
- हस्त कलाओं एवं ग्रामोद्योग का हास
- गाँवों का नगरीकरण

(च) आर्थिक जीवन में परिवर्तन

- पूँजीवाद का विकास
- श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण
- बड़े पैमाने पर उत्पादन के कारण बेकारी की समस्या में बढ़ोत्तरी
- औद्योगिक झगड़े, बीमारी तथा दुर्घटनाओं में वृद्धि
- नशाखोरी, वेश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति एवं बाल अपराध में वृद्धि

औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की समस्याएँ के समाधान में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। उदा. औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण एक प्रमुख समस्या प्रदूषण की है। इसके लिए पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों की जानकारी उनके प्रमुख कारकों एवं उन्हें दूर करने के उपायों से सम्बंधित अन्तर्वस्तु का समावेश किया जाना चाहिए।

प्र.2 व्याख्यात्मक लेखन के प्रमुख सोपानों को बताते हुए किन्ही 3 की विस्तार से व्याख्या करें?

उत्तर – व्याख्यात्मक लेखन के प्रमुख सोपान –

- सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर पढ़ना।

- जानकारी।
- विषय ज्ञान।
- मुख्य अवधारणाओं एवं विचारों को पहचानना एवं योजनाबद्ध रूप से नोट करना।
- मूल पाठ/विषय के सारांश को समझना।
- लेखन में शैली का उपस्थित होना।
- विषय विशिष्ट शब्दावली एवं स्वरूप।
- मूल पाठ के संदर्भ में व्याख्यात्मक कौशल की आवश्यकता।
- मूल पाठ का पुनर्विचार एवं सारांश लिखना।

सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर पढ़ना

छात्राध्यापक को किसी भी विषय-वस्तु को पढ़ाते समय सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर उसकी अवधारणा का बोध कराना होगा अर्थ समझने के लिए उसे कई बार पढ़ा जाता है व स्पष्ट होने के बाद ही आत्मसात हो पाता है।

जानकारी – छात्राध्यापक को अपने विषय की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। जब शिक्षण विषय के आधार पर समूह बना दिया जाता है तो छात्राध्यापकों को जोड़े के रूप में विषय को पढ़ना व समझना पड़ता है। जिससे उन्हें विषय से सम्बन्धित जानकारी होती है। जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं से भी ज्ञान अर्जित किया जा सकता है।

विषय ज्ञान – व्याख्यात्मक लेखन से जुड़ने के लिए छात्रों को विषय का ज्ञान आवश्यक है। लेखन के कुछ आधार होना आवश्यक है। यह आधार हमें विषय के ज्ञान के रूप में प्राप्त होता है। लेखन विषय ज्ञान पर ही अवलम्बित होता है। छात्र को अपनी रुचि, आयु तथा योग्यता के अनुसार विषय का ज्ञान अर्जित करके लेखन से जुड़ना चाहिए व्याख्यात्मक लेखन में यही अर्जित ज्ञान उसका आधार बनता है इसके लिए वाचन की आदत भी डालनी चाहिए तथा इसके लिए छात्र का शब्द भण्डार भी अच्छा होना चाहिए।

प्र.3 वर्णन की प्रभावोत्पादकता के बारे में विस्तार से लिखें?

उत्तर – **वर्णनात्मक**

वर्णन में छात्र किसी घटना, दृश्य, किसी स्थान आदि का विस्तार से वर्णन करता है यह वह प्रविधि है जिसके माध्यम से किसी विषय वस्तु एवं घटना का छात्रों के सामने पूर्व शाब्दिक चित्र पेश किया जाता है इसके माध्यम से किसी घटना, दृश्य तथा नियम एवं सिद्धांतों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है इस तरह वर्णन में रोचकता का समावेश हो जाता है एवं छात्र भाषा पर पर्याप्त अधिकार पा लेते हैं। अभिव्यक्ति शैली में नवीनता एवं विलक्षणता आ जाती है। इसके लिए उन्हें अतिरिक्त परिश्रम एवं तैयारी करनी पड़ती है। वर्णन को विस्तृत विवरण कहना ज्यादा उपयुक्त है। वर्णन एक कला है तथा सजीव रोचक वर्णन करना एक दक्षता अथवा कौशल है।

वर्णन प्रविधि की विशेषताएँ

इसका एक विशिष्ट उद्देश्य होता है उसी को ध्यान में रखकर इसका सम्पादन किया जाता है –

- इसमें एक ही समय में अधिकांश व्यक्तियों के सम्बन्ध में आंकड़े प्राप्त किये जाते हैं।
- इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण जनसंख्या से होता है।
- इसमें विशिष्ट एवं कल्पनात्मक नियोजन आवश्यक।
- इसमें आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण में विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता।

- इसे शाब्दिक तथा गणितीय सूत्रों से भी व्यक्त किया जा सकता।
- इसमें किसी वैज्ञानिक नियम का निर्धारण नहीं किया जाता बल्कि समस्या समाधान के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं।
- इसमें सदैव स्पष्ट एवं परिभाषित समस्या पर ही कार्य किया जाता है।

वर्णन की प्रभावोत्पादकता

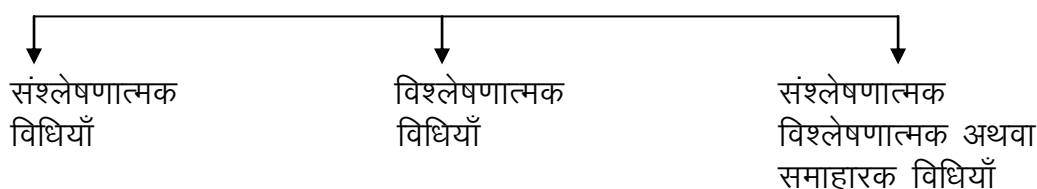
इसे प्रभावपूर्ण बनाने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- अच्छी वर्णन शैली के तत्व – भावों में उतार-चढ़ाव, मुद्रा विन्यास, स्वर को आरोह-अवरोहकता।
- विषय से तादात्म्य स्थापित करने के लिए आवश्यक है – छात्रों के मानसिक स्तर से सम्बंध जोड़ना, सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बंध जोड़ना।
- वर्णन प्रभावशाली होगा यदि – वर्णन स्वयं में सम्पूर्ण, सर्वांगपूर्ण, व्यापक, बहुपक्षीय

प्र.4 वाचन शिक्षण की विधियों को विस्तार से लिखिए?

उत्तर – वाचन शिक्षण की विधियाँ

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वाचन की विधियों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है।



- (i) वर्णमाला पद्धति
- (ii) ध्वन्यात्मक पद्धति
- (iii) अक्षर पद्धति

शिक्षा – जगत में वाचन की शिक्षा के लिए अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं –

- देखो और कहो विधि
- अक्षर बोध विधि
- ध्वनि-साम्य विधि
- अनुध्वनि विधि
- भाषा-शिक्षण की यन्त्र विधि
- समवेत पाठ विधि
- संगति विधि

7. **देखो और कहो विधि** – इसमें एक पूरा शब्द श्यामपद पर लिख दिया जाता है। अक्षरों की पहचान के स्थान पर शब्द के स्वरूप की पहचान करवाई जाती है इस प्रणाली का यह दोष है कि शब्द के रूप और प्रयोग में धोखा हो जाता है जैसे मर्म का धर्म अथवा धर्म का मर्म।

8. **अक्षर बोध विधि** — इसमें वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण के स्थानानुसार सज्जित है जब वर्ण पहचान लेता है तो उसे शब्द दे दिए जाते हैं। जैसे क,म,ल अक्षरों से कमल शब्द बनता।
9. **ध्वनि साम्य विधि** — इसमें एक समान उच्चारण वाले शब्द सिखाए जाते हैं। जैसे क्रम, श्रम, भ्रम आदि।
10. **अनुध्वनि विधि** — इसमें एक समान उच्चरित शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं। इसमें शिक्षक एक शब्द कहता है छात्र शब्द की ध्वनि का अनुसरण करता है।
11. **भाषा शिक्षण की यन्त्र विधि** — इसमें ग्रामोफोन के तबे में पाठ भरा जाता है जिसे बालक सुनकर अनुकरण करके पढ़ने का अभ्यास करता है इससे उच्चारण में एकरूपता और पढ़ने के क्रम में समता आ जाती है।
12. **समवेत पाठ विधि** — अध्यापक पाठ के अंश को भावपूर्ण तरीके से पढ़ता है व सभी एक साथ उसकी आवृत्ति करते हैं।
7. **संगति विधि** — इसका प्रयोग मान्टेसरी ने किया था इसमें बहुत सी वस्तुओं चित्रों, खिलौनों आदि के आगे उनके नाम कार्ड पर लिखकर रखे जाते हैं फिर कार्ड फेंक दिया जाता है व बच्चों से कहा जाता है जिस वस्तु का जो नाम है उसके आगे वही कार्ड रखकर आए। खेल होने के कारण इसे शिक्षा में सम्मिलित नहीं किया गया।

1.12. इकाई सारांश

शिक्षा तकनीकी का तात्पर्य उस पाठ्य वस्तु से है जो शिक्षा की प्रक्रिया के क्या कैसे और क्यों का उत्तर देती है इसमें शिक्षा प्रक्रिया संबंधी वैज्ञानिक सूचनाओं के साथ उसकी उपयोगिता को अधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षा तकनीकी कोई नई शिक्षण पद्धति नहीं है अपितु ऐसा विज्ञान है जिनके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति की जाती है। विज्ञान के विकास ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं क्रिया कलापों को प्रभावित किया है। उदाहरण :- कृषि, उद्योग, चिकित्सा, संचार, परिवहन, दैनिक सामान्य जीवन

कोठारी-आयोग के अनुसार “हमने शिक्षा की पुनर्संरचना के लिए इस प्रतिवेदन में जिनसे बुनियादी उपागम एवं दर्शन को अपनाया है वह इस धारणा पर आधारित है कि देश की प्रगति, कल्याण एवं सुरक्षा शिक्षा के विस्तार एवं गुणात्मक विकास एवं विज्ञान के अनुसन्धान पर ही निर्भर है।” परिणामस्वरूप भारत में आज शिक्षा के विस्तार के साथ विज्ञान का भी व्यापक विस्तार हुआ है। इसके द्वारा प्रशिक्षित वैज्ञानिक शक्ति में भी वृद्धि हुई है।

आज भारत में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के फलस्वरूप जो परिवर्तन हुए हैं तथा जो गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। वे निम्नांकित हैं :-

- (क) सामाजिक जीवन में परिवर्तन
- (ख) पारिवारिक जीवन में परिवर्तन
- (ग) धार्मिक जीवन में परिवर्तन
- (घ) राज्य के कार्यों में परिवर्तन
- (ङ) ग्रामीण समुदायों में परिवर्तन
- (च) आर्थिक जीवन में परिवर्तन

कृषि विकास की समस्याओं के समाधान के उपाय

भारत में कृषि के विकास के मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधाओं को दूर करने के लिए नि. लि. उपायों को अपनाया जा सकता है :-

- भूमि सुधार कार्यक्रमों को दृढ़ता से लागू किया जाए।
- उन्नत बीज, खाद, सिंचाई, कृषियुक्त, कीटनाशक दवाओं आदि उपलब्ध करना।
- कृषि विकास की नई तकनीक का प्रयोग बताने के लिए मेलों, प्रदर्शनियों एवं नवीन अनुसन्धानों के प्रचार की व्यवस्था।
- सिंचाई सुविधाओं का अधिकाधिक विस्तार।
- कृषि निति का निर्माण किया जाए।
- जनसंख्या नियंत्रण हेतु जनसंख्या शिक्षा पर बल।
- कृषि शिक्षा प्रसार पर बल।
- कृषि विकास कार्यक्रमों एवं ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास।
- कृषि सुरक्षा के उपाय के तहत फसल बीमा योजना लागू।
- संबंधित व्यवसाय मत्स्य पालन, मुर्गी पालन को प्रोत्साहन।

विवरण देने का उद्देश्य

छात्रों के मस्तिष्क में एक मानचित्र बनाना। **सक्सेना के शब्दों में** विवरण देना एक कला है इस कला में निपुण होने के लिए शिक्षक अपनी कल्पना शक्ति का सहारा लेते हुए किसी वस्तु अथवा घटना का विवरण इतने उत्साह तथा प्रवाहशीलता के साथ प्रस्तुत करता है कि कक्षा के सभी छात्रों को इसका ज्ञान सरलतापूर्वक हो जाता है।

व्याख्यत्मक लेखन के प्रमुख सोपान –

- सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर पढ़ना।
- जानकारी।
- विषय ज्ञान।
- मुख्य अवधारणाओं एवं विचारों को पहचानना एवं योजनाबद्ध रूप से नोट करना।
- मूल पाठ/विषय के सारांश को समझना।
- लेखन में शैली का उपस्थित होना।
- विषय विशिष्ट शब्दावली एवं स्वरूप।
- मूल पाठ के संदर्भ में व्याख्यात्मक कौशल की आवश्यकता।
- मूल पाठ का पुनर्विचार एवं सारांश लिखना।

वर्णन प्रविधि की विशेषताएँ

इसका एक विशिष्ट उद्देश्य होता है उसी को ध्यान में रखकर इसका सम्पादन किया जाता है –

- इसमें एक ही समय में अधिकांश व्यक्तियों के सम्बंध में आंकड़े प्राप्त किये जाते हैं।

- इसका सम्बंध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण जनसंख्या से होता है।
- इसमें विशिष्ट एवं कल्पनात्मक नियोजन आवश्यक।
- इसमें आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण में विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता।
- इसे शाब्दिक तथा गणितीय सूत्रों से भी व्यक्त किया जा सकता।
- इसमें किसी वैज्ञानिक नियम का निर्धारण नहीं किया जाता बल्कि समस्या समाधान के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्रदान की जाती है।
- इसमें सदैव स्पष्ट एवं परिभाषित समस्या पर ही कार्य किया जाता है।

डोनल मायल “पठन और लेखन की तुलना करते हुए लिखते हैं कि लिखने में मौखिक भाषा को स्थाई रूप प्रदान किया जाता है और पठन में ठीक उसका उलटा किया जाता है।”

1.13. संदर्भ सूची

- जीत योगेन्द्र भाई (2006) हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- शर्मा राजकुमारी (2007) हिन्दी शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा 282002
- चतुर्वेदी शिखा (2008) हिन्दी शिक्षण, भाषा एवं साहित्य शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- यादव सियाराम (2016) पाठ्यक्रम विकास एवं विद्यालय, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- यादव सियाराम (2016) पाठ्यक्रम एवं भाषा, विनोद पुस्तक मंदिर,, आगरा 2
- कुशवाहा मंजु, सोनी संदीप (2016) हिन्दी शिक्षण, राखी प्रकाशन प्रा.जि., आगरा
- चतुर्वेदी स्नेहलता (2015–16) पाठ्यक्रम में भाषा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चौबे एस.पी., शिक्षण कला, दोआबा हाउस नई सड़क, दिल्ली
- पाण्डेय रामशकल, हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा